an>

Title: Regarding promotion of yoga in the country.

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर): अध्यक्ष महोदया, पूरी दुनिया में ग्लोबल वॉर्मिंग का जो दौर चल रहा है, उसमें पूरी दुनिया अब एक साथ बैठ कर पूरी पृथ्वी पर विचार कर रही है। हमारी भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम की विचारधारा वाली संस्कृति है। पूरी दुनिया हमारी संस्कृति को श्रेष्ठ मान चुकी है। भारत देश में जीवन को संपूर्णता में देखने की प्रवृत्ति एक उच्च संस्कार के रूप में प्राप्त हुई है जो कि भगवत गीता में उल्लिखित योग की शिक्षा और पाणिनी के शिष्य पतंजलि के द्वारा संहिताबद्ध किए गए योगसूत्र एवं अभी विगत समय में 21 जून 2015 को मनाए गए योग दिवस के रूप में दृष्टिगत हुई है। भारतीय खडदर्शन से योग का अर्थ मन, शरीर एंव ईश्वर की एकात्मता से है। इस संस्कार का प्रभाव पंडित दीन दयान उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद में भी परिलक्षित होता है। जहां दीन दयाल जी राज्य और व्यक्ति के सहअस्तित्व योग एवं एकात्मता पर बल देते हैं। यह आश्चर्य ही प्रतीत होता है कि इस मूल्य को अपना आदर्श मानने वाली केन्द्रीय सरकार के प्रति पिछले दिनों लोगों ने असहनशीलता के आरोप लगाए, जो कि भ्रामक सिद्ध हुए। विगत वर्षों में योग एवं आसन के प्रति जनजागरूकता में वृद्धि हुई है एवं इसके लाभ विशेषकर रोगमुक्त होने के साथ-साथ मानसिक क्षमताओं में वृद्धि के रूप में सहनशीलता विकसित हुई है।

अतः आपके माध्यम से मैं भारत सरकार से निवेदन करता हूं कि देशवासियों को अधिकतम लाभ हेतु योग अनिवार्यता कानून बनाया जाए एवं सभी सरकारी, शैक्षणिक एवं रक्षा संस्थानों के साथ-साथ निजी क्षेत्र में भी इसे लागू किया जाए। योग के प्रति जनजागरूकता कार्यक्रम और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की योग पुरुष एवं महिला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाए ताकि सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके और पूरी वसुधा स्वस्थ व सहनशील होकर वसुधैव कुटुंबकम के हमारे विचार का अमल कर खुशहाल बनकर मानवता का सही अर्थ सिद्ध कर सकें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष :

श्री केशव प्रसाद मौर्य,

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत,

श्री रामचरण बोहरा,

श्री चन्द्र प्रकाश जोशी,

श्री भैरों प्रसाद मिश्र,

श्रीमती ज्योति धुर्वे और

डॉ. मनोज राजोरिया को कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।